महाराजा अग्रसेन का जन्म

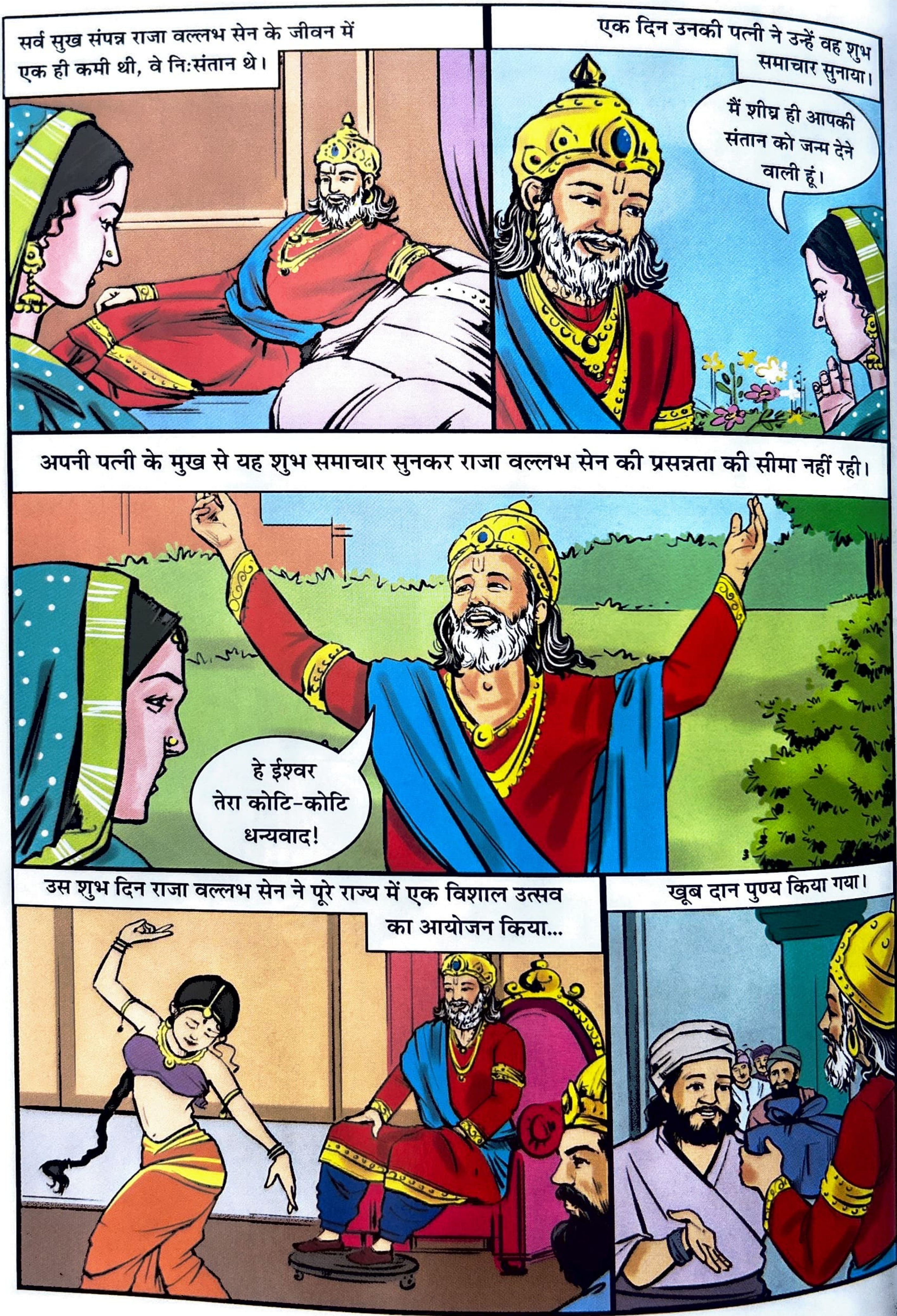

सर्व सुख संपन्न राजा वल्लभ सेन के जीवन में एक ही कमी थी, वे निःसंतान थे।
एक दिन उनकी पत्नी ने उन्हें वह शुभ समाचार सुनाया।
मैं शीघ्र ही आपकी संतान को जन्म देने वाली हूं।
अपनी पत्नी के मुख से यह शुभ समाचार सुनकर राजा वल्लभ सेन की प्रसन्नता की सीमा नहीं रही।
हे ईश्वर तेरा कोटि-कोटि धन्यवाद!
उस शुभ दिन राजा वल्लभ सेन ने पूरे राज्य में एक विशाल उत्सव का आयोजन किया...
खूब दान पुण्य किया गया।

प्रजा भी इस अवसर पर अत्यंत प्रसन्न थी।
समय आने पर रानी भगवती ने एक सुंदर और स्वस्थ बालक को जन्म दिया।
अपने पुत्र का मुंह देखकर राजा वल्लभ सेन फूले ना समाये।
हर्षोल्लास ने मानो सम्पूर्ण प्रताप नगर राज्य को अपनी आगोश में ले लिया।

शुभ मुहूर्त देखकर राजा वल्लभ सेन ने एक समारोह आयोजित किया, जिसमें देश-विदेश के विद्वानों और पंडितों को आमंत्रित किया गया। इस समारोह में पंडितों और विद्वानों ने बहुत सोच-समझकर बालक का नाम रखा- अग्रसेन।

बालक अग्रसेन के नामकरण पर मानो सारा ब्रह्मांड प्रसन्न हो उठा, मानो देवता स्वयं पुष्पवर्षा करने के लिए एकत्रित हो गए हों।

महाराजा अग्रसेन का बचपन

शीघ्र ही बालक अग्रसेन को महर्षि तांडव के आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेज दिया गया। महर्षि के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करते हुए बालक अग्रसेन ने सिद्ध कर दिया कि वह कुशाग्रबुद्धि का स्वामी है।
मात्र छह वर्ष की आयु में बालक अग्रसेन जहां पढ़ने-लिखने में सबसे आगे था...
...वहीं तलवारबाजी...

तीरन्दाजी...
...और घुड़सवारी में भी उसका कोई सानी नहीं था।
बालक अग्रसेन में साहस और बल भी कूट-कूट कर भरा हुआ था और इसका पता सभी को तब लगा जब एक दिन ऋषि तांडव के आदेश पर वह वन में यज्ञ के लिए लकड़ियां काटने गया।

वहां अचानक वह दृश्य दिखाई दिया-
यह तो राजा यतीन्द्र हैं...
बचाओ... बचाओ...
... हा...हा...हा!!!
राजा होकर एक अबला कन्या पर ऐसा अत्याचार! इस दुराचारी राजा को सबक सिखाना होगा।
बालक अग्रसेन तुरंत ही ऋषि कन्या की रक्षा के लिए राजा यतीन्द्र के रथ पर कूद पड़ा।

अबला कन्या से दूर हट दुराचारी।
मद में चूर राजा यतीन्द्र संभल पाता उससे पहले ही बालक अग्रसेन ने उसे बालों से पकड़कर नीचे खींच लिया और...
उसे बालों से खींचते हुए ऋषि तांडव के समक्ष ले आया।

बालक अग्रसेन के इस कारनामे से उनके गुरु ऋषि तांडव ही नहीं-
राजा वल्लभ सेन और रानी भगवती भी अत्यंत प्रसन्न थीं।
निश्चय ही एक दिन हमारा पुत्र कुशल शासक और न्यायप्रिय राजा सिद्ध होगा।
आप एकदम उचित कह रहे हैं महाराज।
इसी तरह खेलते और ज्ञान प्राप्त करते बालक अग्रसेन 14 वर्ष की आयु तक ऋषि तांडव के आश्रम में रह...
युवावस्था की ओर अग्रसर होता चला गया।

अभी अग्रसेन मात्र पंद्रह वर्ष के ही थे कि उनके पिता राजा वल्लभ सेन ने उन्हें सूचना दी
कौरवों और पांडवों में युद्ध की रणभेरी बज चुकी है, चूंकि पांडव हमारे मित्र हैं इसलिए हमें उनकी तरफ से युद्ध लड़ने के लिए कुरुक्षेत्र जाना होगा।
आपकी आज्ञा हो तो इस युद्ध में मैं भी आपके संग चलूं, मैं युद्ध में अवश्य ही ऐसा पराक्रम दिखाऊंगा जैसा कोई अन्य नहीं दिखा पाएगा।
तुमने सुंदर बात कही पुत्र, परंतु तुम्हारी आयु अभी मात्र पंद्रह वर्ष की है। इस आयु में तुम्हारा युद्ध करना ना न्यायसंगत है और ना धर्मसंगत।
क्षमा करें पिताश्री, आप मुझे युद्ध में योद्धा की तरह नहीं एक सहायक की तरह लेकर चल सकते हैं।
राजा वल्लभ सेन को अपनी महारानी की इच्छा एवं अपने पुत्र की प्रार्थना को मानना पड़ा और इस प्रकार वह अपने वापस लौटने तक प्रताप नगर राज्य की बागडोर अपने भाई कुंदसेन के हाथों में सौंपकर चले गए।

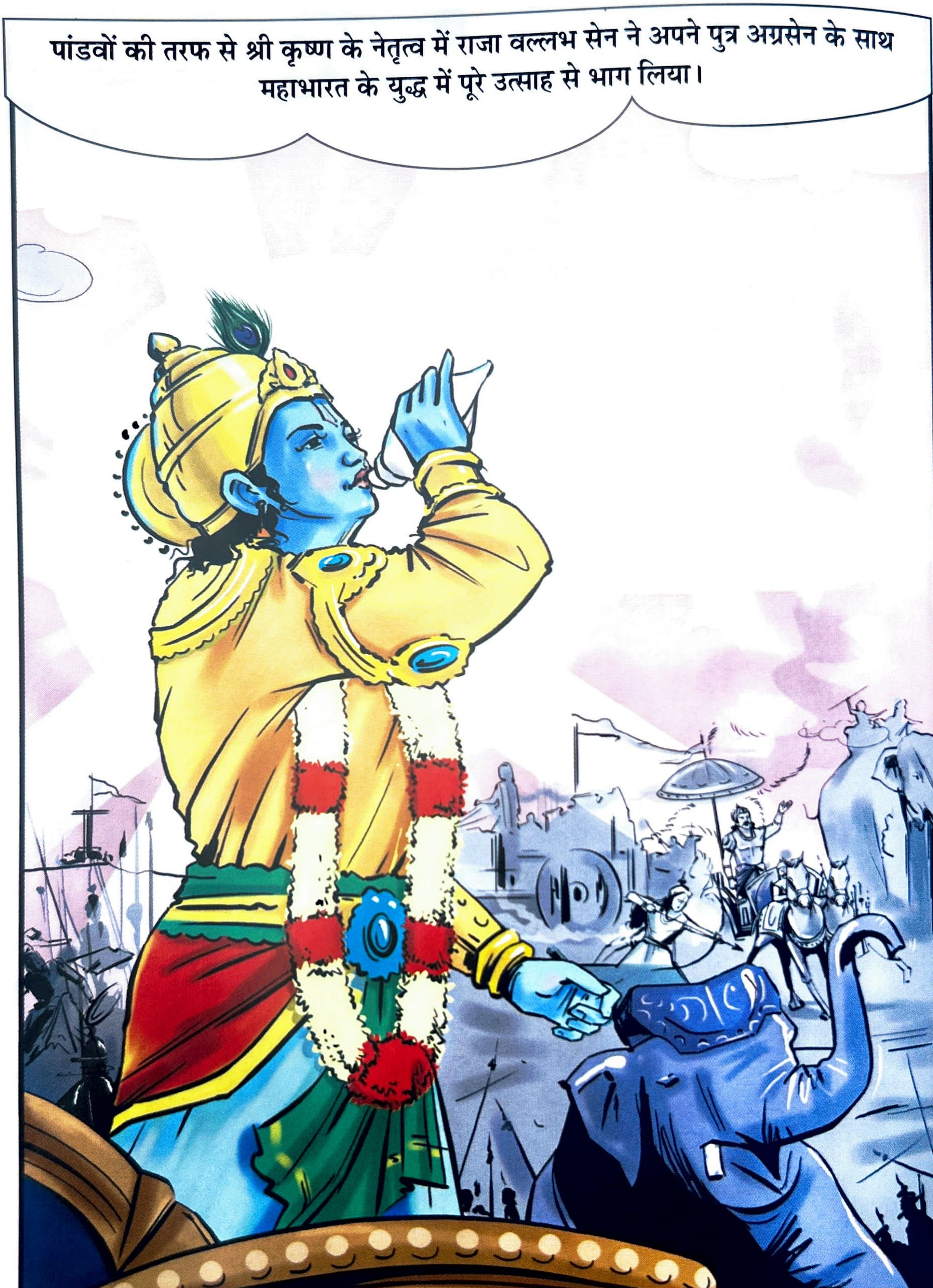
पांडवों की तरफ से श्री कृष्ण के नेतृत्व में राजा वल्लभ सेन ने अपने पुत्र अग्रसेन के साथ महाभारत के युद्ध में पूरे उत्साह से भाग लिया।

अग्रसेन ने वह गीता उपदेश सुना जो भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया।
नौ दिन तक राजा वल्लभ सेन गंगापुत्र और महान योद्धा भीष्म के सामने युद्ध में डटे रहे।
परंतु भीष्म जैसे महायोद्धा के सामने अधिक समय तक टिके रहना संभव नहीं था, परिणाम...
पिताश्री....
अग्रसेन पिता को मरते गिरते देखकर चीखते हैं।
आह ह ह....
अंततः वल्लभ सेन वीरगति को प्राप्त हुए।

अग्रसेन का क्रोध असंख्य तीक्ष्ण बाणों के रूप में युद्धभूमि में बरस पड़ा।
लेकिन इस क्रोध के बाद भी अग्रसेन ने निहत्थों पर वार नहीं किया।
और ऐसा तब तक होता रहा जब तक महाभारत का युद्ध समाप्त नहीं हो गया।
युधिष्ठिर अग्रसेन सेः- इस युद्ध में आपके सहयोग का अत्यधिक धन्यवाद परमवीर अग्रसेन। हमें अत्यंत शोक है कि आपके पिता इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।

महाभारत के इस युद्ध की समाप्ति के साथ ही द्वापर युग भी समाप्त हो रहा है। अब कलयुग का आरंभ होगा और इस कलयुग में ...
...अग्रसेन भगवान विष्णु के अवतार के रूप में धर्म की रक्षा करेंगे। मेरे द्वारा अर्जुन को दिया गया गीता का ज्ञान संपूर्ण विश्व में अग्रसेन ही फैलाएंगे।

और फिर अग्रसेन श्रीकृष्ण से आशीर्वाद प्राप्त कर पिता के वीरगति पा जाने का शोक लेकर वापस प्रताप नगर आ गये।

ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण जहां अग्रसेन का राज्याभिषेक होना था वहीं दूसरी ओर......
तुम बंदी बनाए जाते हो कुमार।
ये आप क्या कर रहे हैं चाचा श्री। यह तो राज्य हथियाने का षड्यंत्र है।
सही समझे भतीजे, बड़े भाई मुझे अपने पीछे जो राज सौंप गए थे उनके ना रहने पर अब वह मेरा है। उनका ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण तुम मेरी अड़चन हो अतः तुम्हें बंदी बनाया जाता है।
अब तुम्हारा सारा जीवन बंदी गृह में बीतेगा।
ओह!

आखिर एक दिन-
अब आप मुक्त हैं कुमार।
आप कौन?
आपका शुभचिंतक। आपके चाचा के द्वारा यहां आपकी हत्या का षड्यंत्र रचा जा रहा है। आप तुरंत ही यहां से कहीं दूर निकल जाइए।
शीघ्र ही वे महर्षि गर्ग के आश्रम में पहुंच गए। जहां महर्षि गर्ग ने उनकी सारी स्थिति जानकर उन्हें बताया-

अपना राज्य पुनः पाने के लिए तुम्हें अपनी शक्ति पानी होगी और इसके लिए भगवान शंकर की साधना करनी होगी।
महर्षि गर्ग की आज्ञा का पालन करते हुए अग्रसेन ने भगवान शंकर की साधना करके उन्हें प्रसन्न किया तो भगवान शंकर ने उन्हें बताया कि तुम्हें महादेवी महालक्ष्मी की साधना करनी होगी।
अग्रसेन एक पैर पर खड़े होकर देवी महालक्ष्मी की साधना में लीन हो गए। 1100 दिन की कठिन तपस्या के बाद देवी महालक्ष्मी ने प्रसन्न होकर वरदान दिया।
शीघ्र ही देवी महालक्ष्मी की कृपा से अग्रसेन ने अपनी शक्ति संगठित की और अपने चाचा कुंदसेन...

और उसके पुत्र वज्रसेन को ध्वस्त किया।
एक दिन महर्षि गर्ग ने अग्रसेन को बताया-
हमारे एक मित्र ऋषि उद्वालक जी का संदेशा आया है, कि उनके शिष्य नागलोक के राजा महिधर की रूपवती कन्या माधवी जो कि लक्ष्मी का अवतार है और अग्रसेन जी विष्णु का अवतार हैं- अत: आप अग्रसेन जी को लेकर माधवी से विवाह के लिए नागलोक पधारें।
जैसी आज्ञा ऋषिवर।
इधर नागलोक के राजा महिधर की दूसरी ही इच्छा थी-
मेरी पुत्री माधवी इतनी रूपवान और बुद्धिमान है, इसका विवाह तो देवों के राजा इंद्र से होना चाहिए।
महिधर का राज्य तो बहुत सुंदर है और यहां की कन्याएं भी अति सुंदर हैं।

हम यहां की एक कन्या से नहीं अपितु सभी सुंदर कन्याओं से विवाह करेंगे।
आप देवराज होने के घमंड में चूर हैं इसीलिए ऐसी अय्याशी की बातें कर रहे हैं। और कोई अय्याश हमारा वर हो ऐसा हमें कदापि स्वीकार नहीं। इसलिए हम आपसे कभी भी विवाह नहीं करेंगे।
अगले दिन माधवी अपनी सहेलियों के साथ उसी वाटिका में गौरी पूजा के लिए जाती है, जिसमें महाराजा अग्रसेन गर्ग ऋषि के साथ ठहरे हुए हैं।
अचानक सामने शेर को देखकर सभी कन्याएं भयभीत हो जाती हैं। तभी एक तीर से कई तीर निकलकर शेर को कैद कर लेते हैं, जो राजा अग्रसेन ने चलाया था।
यह देखकर माधवी ने मन ही मन अग्रसेन को अपना पति स्वीकार कर लिया।

महिधर असमंजस में थे। उनके अनुसार नाग भगवान शिव के उपासक हैं और अग्रसेन भगवान विष्णु के उपासक। भगवान विष्णु का वाहन गरुड़ है, जो नागों का शत्रु है। शत्रु के यहां शादी कैसे हो सकती है?
यह ठीक है कि भगवान शंकर के गले का आभूषण नाग है परंतु उसी नाग पर क्षीरसागर में भगवान विष्णु शयन करते हैं। ईश्वर एक है। एक सगुण है-एक निर्गुण है।
राजन! कुमार उचित कह रहे हैं।
जैसी आपकी आज्ञा गुरुवर।
अग्रसेन और माधवी का विवाह धूमधाम से संपन्न हुआ।
माधवी को लेकर अग्रसेन अग्रोहा पहुंचते हैं। दूसरी तरफ से भाई शौर्यसेन अपनी माता और ब्राह्मणों के साथ बंदीगृह से मुक्त होकर अग्रोहा आते हैं।

देवराज इंद्र का प्रतिशोध

देवराज! हम व्यर्थ खून-खराबे में विश्वास नहीं रखते, युद्ध होगा तो व्यर्थ ही भारी जान-माल की हानि होगी, इसलिए हम आपसे वापस लौट जाने का निवेदन करते हैं।
अग्रसेन! जान-माल की हानि की इतनी चिंता है तो माधवी को हमें सौंप दो। हम उसे लेकर वापस लौट जायेंगे।

लगता है आपकी बुद्धि पर पानी फिर गया है देवराज इंद्र। ऐसा प्रस्ताव रखकर तुम हमें कायर समझने की भारी भूल कर रहे हो। अगर तुम युद्ध चाहते हो तो युद्ध सही।
आक्रमण!!

दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध छिड़ गया-
इस युद्ध में अग्रसेन की तरफ से नागराज महिधर की सेना भी आ कूदी।
इस युद्ध में अग्रसेन की वीरता ने देवराज इंद्र की सेना के छक्के छुड़ा दिये।

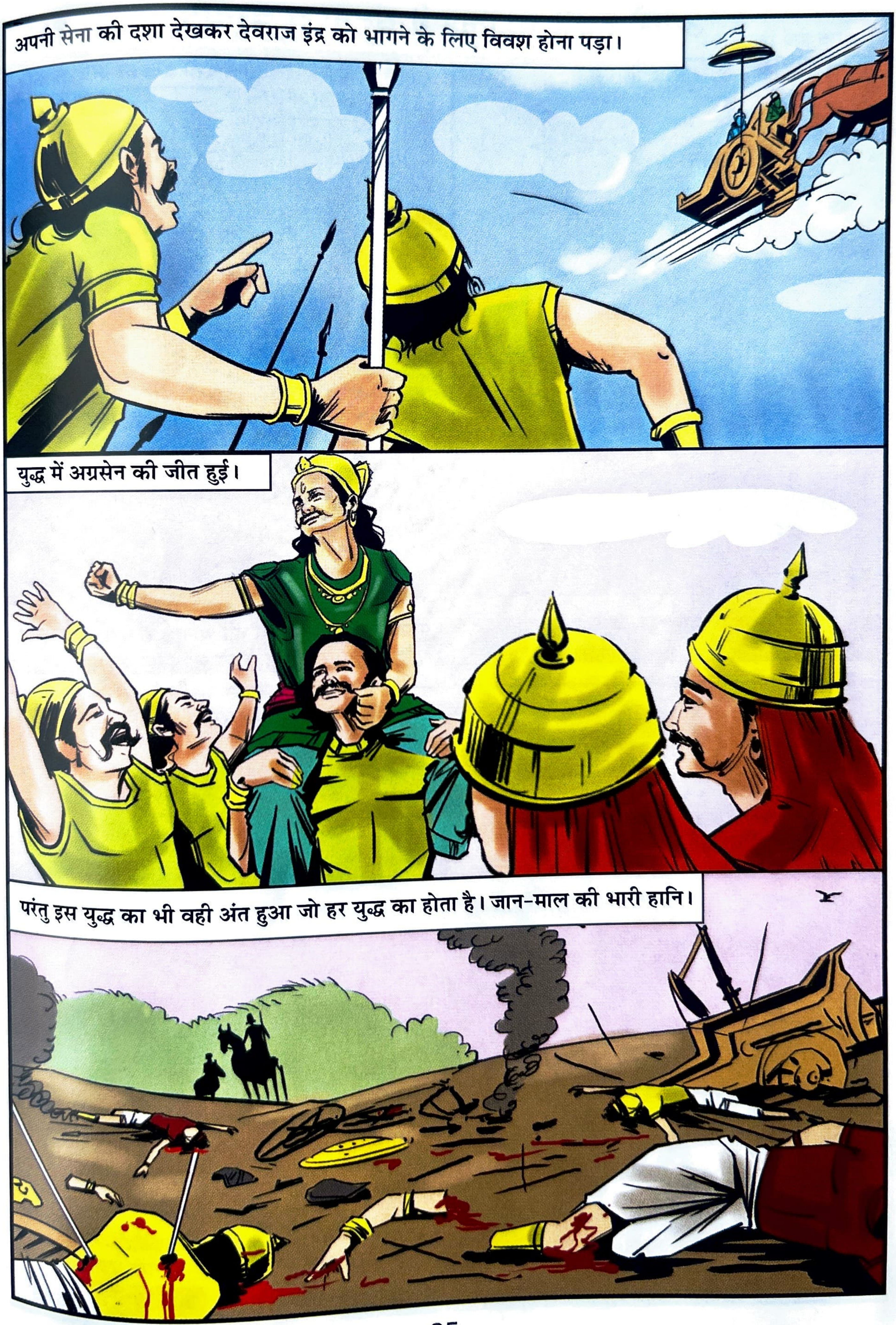
अपनी सेना की दशा देखकर देवराज इंद्र को भागने के लिए विवश होना पड़ा।
युद्ध में अग्रसेन की जीत हुई।
परंतु इस युद्ध का भी वही अंत हुआ जो हर युद्ध का होता है। जान-माल की भारी हानि।

अग्रसेन की महालक्ष्मी वंदना व वरदान

ऐसे में राजकोष का खाली होना और राजा का चिंतित होना आवश्यक था।
हमारे राज्य की दशा बहुत खराब है। इंद्र मात्र रणभूमि छोड़कर भागा है। हमारे राज्य की दशा की जानकारी मिलते ही वह हम पर फिर से आक्रमण कर सकता है। हमें इसका कोई उपाय खोजना होगा।
बिना धन और समृद्धि के हम पुनः स्थिति नहीं प्राप्त कर सकते, इसलिए हमें धन की प्राप्ति करनी होगी...
अपने गुरु महर्षि गर्ग की आज्ञा लेकर अग्रसेन अपनी पत्नी माधवी के साथ एक बार फिर कठोर तपस्या में लीन हो गये।

वर्षों के कठोर तप के बाद महालक्ष्मी प्रसन्न हुई...
आंखें खोलो पुत्र और कहो क्या चाहते हो?
धन और समृद्धि के साथ-साथ शत्रु से भयमुक्त रहने का वरदान दें देवी।
तथास्तु, मैं तुम्हारी कुलदेवी बनकर सदा तुम्हारी रक्षा करूंगी और सदा तुम्हें धन-समृद्धि से परिपूर्ण रखूंगी।
मेरे लिए क्या आज्ञा है भ्राताश्री?
प्रतापनगर राज्य का सिंहासन अब तुम संभालोगे।
जैसी आपकी आज्ञा भ्राताश्री।

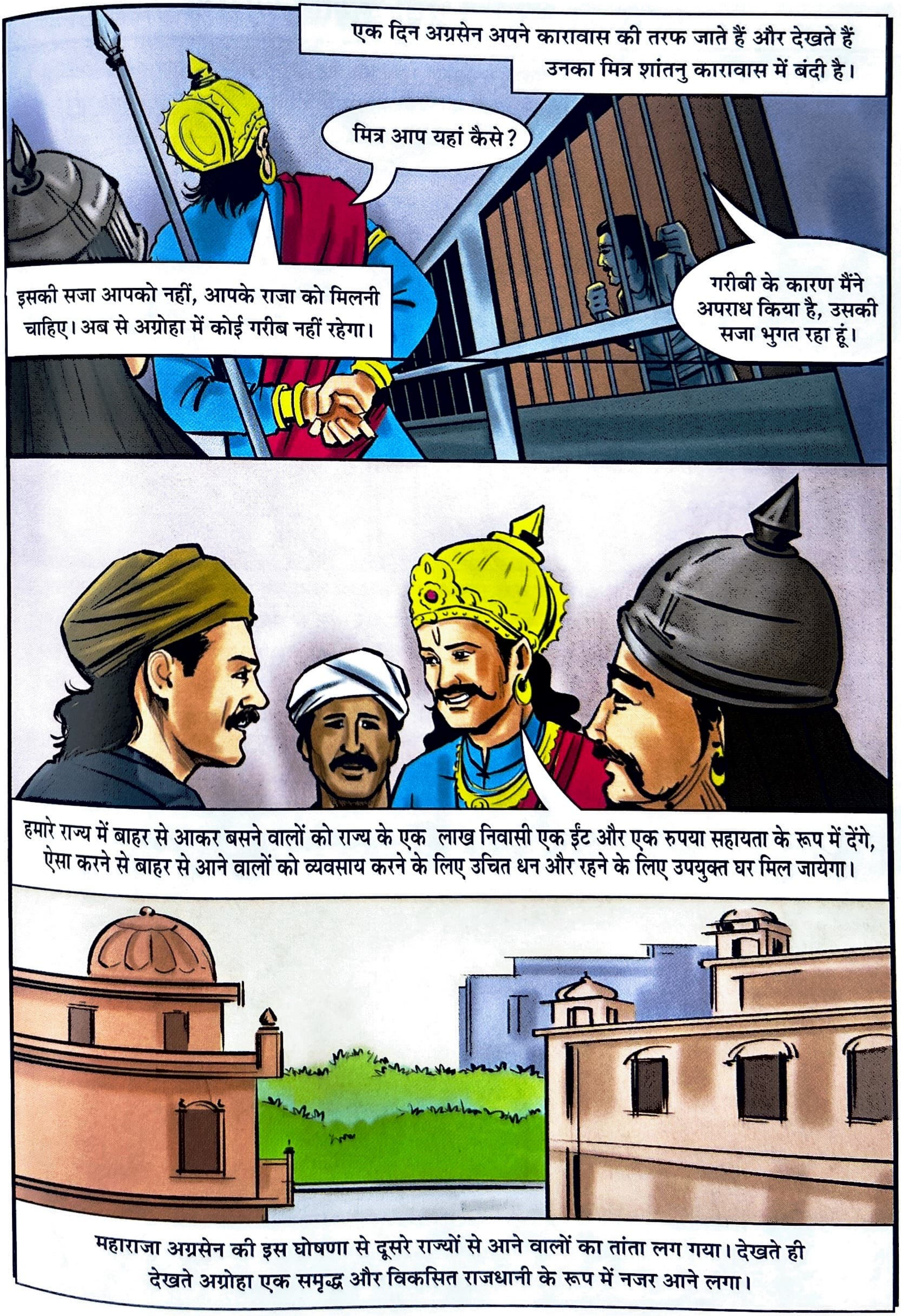
एक दिन अग्रसेन अपने कारावास की तरफ जाते हैं और देखते हैं उनका मित्र शांतनु कारावास में बंदी है।
मित्र आप यहां कैसे?
गरीबी के कारण मैंने अपराध किया है, उसकी सजा भुगत रहा हूं।
इसकी सजा आपको नहीं, आपके राजा को मिलनी चाहिए। अब से अग्रोहा में कोई गरीब नहीं रहेगा।
हमारे राज्य में बाहर से आकर बसने वालों को राज्य के एक लाख निवासी एक ईंट और एक रुपया सहायता के रूप में देंगे, ऐसा करने से बाहर से आने वालों को व्यवसाय करने के लिए उचित धन और रहने के लिए उपयुक्त घर मिल जायेगा।
महाराजा अग्रसेन की इस घोषणा से दूसरे राज्यों से आने वालों का तांता लग गया। देखते ही देखते अग्रोहा एक समृद्ध और विकसित राजधानी के रूप में नजर आने लगा।

महाराजा अग्रसेन एक कुशल शासक

महाराजा अग्रसेन ने अपने शासन में एक ऐसे आदर्श राज्य की नींव डाली जहां ना कोई गरीब था और ना अमीर। सभी व्यक्तियों को जीवन यापन की सभी सुख सुविधाएं समान रूप से उपलब्ध थीं।

राज्य को संगठित करने के पश्चात जब सब कुछ सुख-शांति से चलने लगा तब महाराजा अग्रसेन को समाज को संगठित करने की सूझी। उन्होंने 18 यज्ञ किए जिसमें 17 यज्ञ पशु बलि से संपन्न हुए। 18वें यज्ञ में उन्होंने पशु बलि नहीं देने का निर्णय किया। पशु बलि की जगह उन्होंने नारियल की आहुति देकर यज्ञ संपन्न किया। इसके लिए उन्हें अपना क्षत्रिय धर्म छोड़कर वैश्य धर्म अपनाना पड़ा। इस प्रकार उन्होंने अहिंसा का मार्ग प्रशस्त किया। यज्ञ में शामिल 18 महर्षियों के नाम पर अग्रवाल समाज को 18 गोत्र में विभाजित किया।

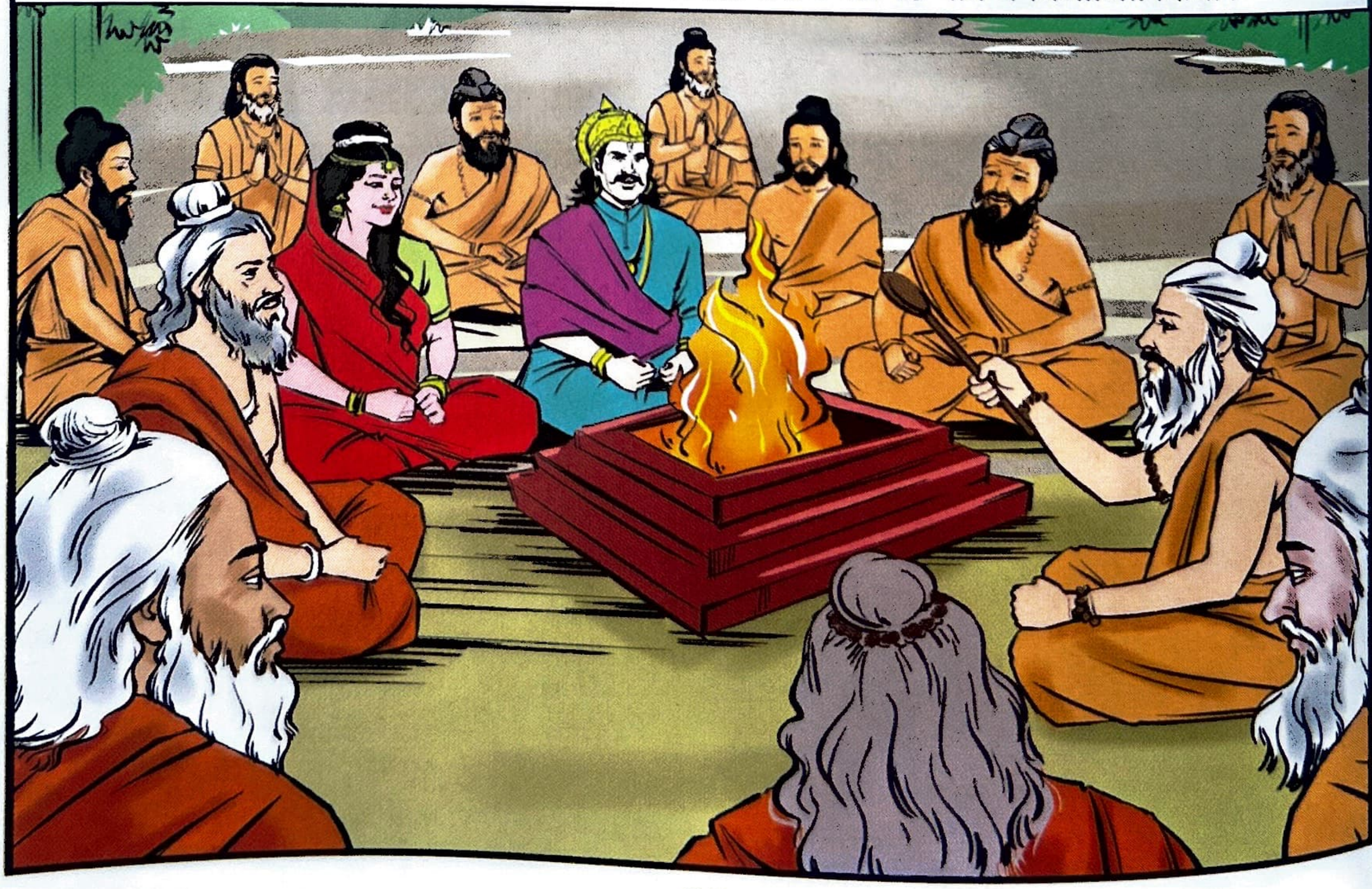

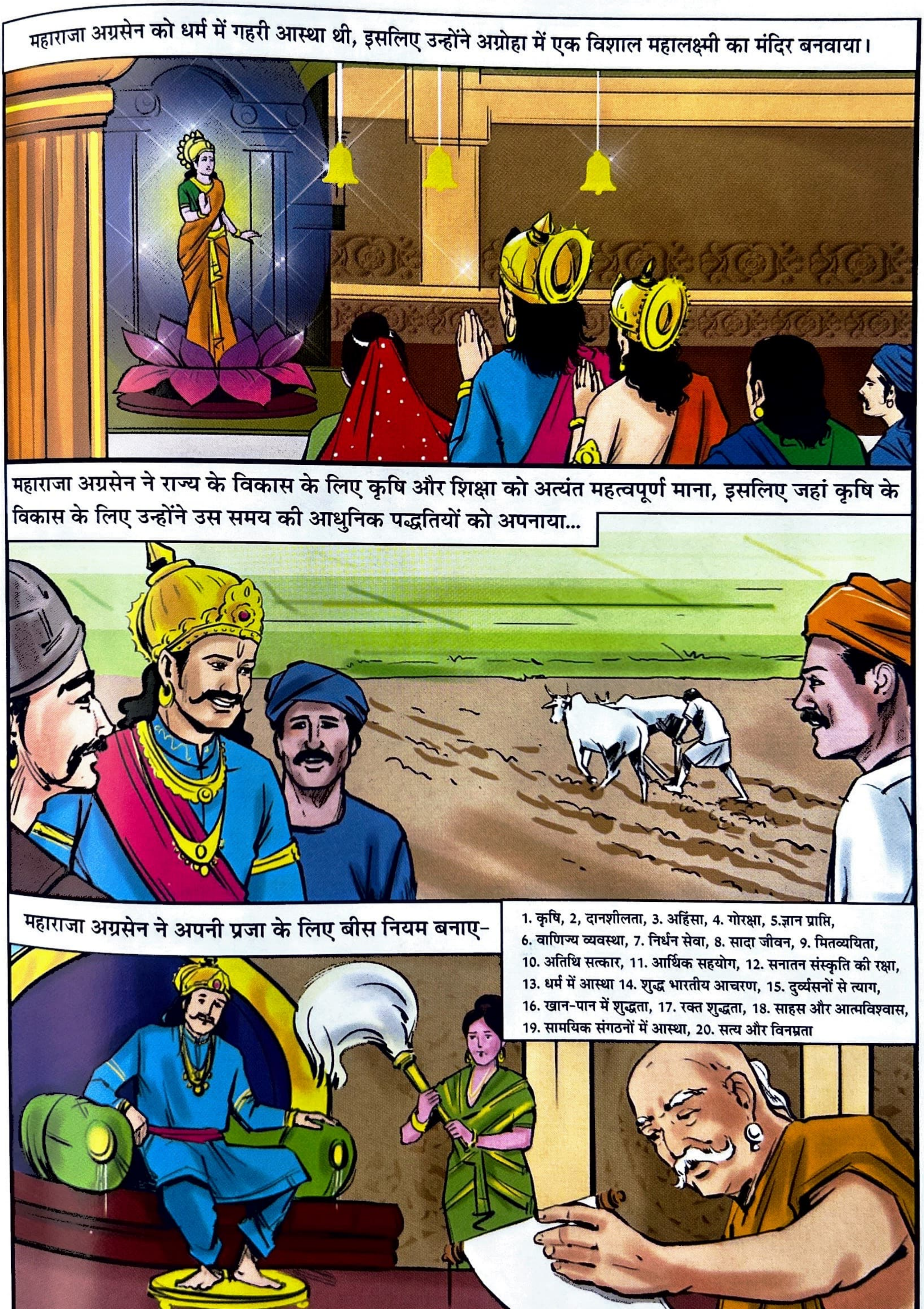
महाराजा अग्रसेन को धर्म में गहरी आस्था थी, इसलिए उन्होंने अग्रोहा में एक विशाल महालक्ष्मी का मंदिर बनवाया।
महाराजा अग्रसेन ने राज्य के विकास के लिए कृषि और शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण माना, इसलिए जहां कृषि के विकास के लिए उन्होंने उस समय की आधुनिक पद्धतियों को अपनाया...
महाराजा अग्रसेन ने अपनी प्रजा के लिए बीस नियम बनाए-
1. कृषि, 2, दानशीलता, 3. अहिंसा, 4. गोरक्षा, 5.ज्ञान प्राप्ति, 6. वाणिज्य व्यवस्था, 7. निर्धन सेवा, 8. सादा जीवन, 9. मितव्ययिता, 10. अतिथि सत्कार, 11. आर्थिक सहयोग, 12. सनातन संस्कृति की रक्षा, 13. धर्म में आस्था 14. शुद्ध भारतीय आचरण, 15. दुर्व्यसनों से त्याग, 16. खान-पान में शुद्धता, 17. रक्त शुद्धता, 18. साहस और आत्मविश्वास, 19. सामयिक संगठनों में आस्था, 20. सत्य और विनम्रता

अग्रवाल समाज की नींव रखनेवाले महाराज अग्रसेन ने हजारों साल पहले जो नियम और व्यवस्था लागू की वह आज भी समाज को एक नई राह दिखा रही है और आगे भी सदा दिखाती रहेगी।

भारत सरकार द्वारा 24-09-1976 को महाराजा अग्रसेन के नाम पर डाक टिकट जारी हुआ।

1995 में भारत सरकार द्वारा कोरिया से प्राप्त जलपोत का नामकरण महाराजा अग्रसेन जी के नाम पर किया गया।

राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 9 का नामकरण भी महाराजा अग्रसेन जी के नाम पर रखा गया।